

पत्रांक (पत्रांक)

दिनांक	आज्ञा - पत्र
27/5	<p>पत्रायली केरुनी अन्वित पत्रायली यत्रायली स-वपे चापलयप समभावदि सक धार-धर आवाक लगेन के चापपुत्र उपलित नही। अतः पत्रायली के अदत ए नरी य अपम पुत्रीके खासिपे उपा जाता है। पत्रायली केवल शुभारधे कर न-धर अप यो बाद लमनीक द-धित कर रहे।</p>

पत्रायली

14/8/2

14/8/2

14/8/2

14/8/2